Pedagogy Insights
An International Peer reviewed Journal of Multidisciplinary research
Vol. 1, Issue. 2, July-September 2026, 132-138
ISSN: 3139-843X
DOI:

सार्वजनिक वितरण प्रणाली में सब्सिडी का आर्थिक एवं राजकोषीय विश्लेषण

[1]*मोनू कुमार, [2]प्रो. (डा.) मधुकर श्याम शुक्ला

[1]शोद्यार्थी अर्थषास्त्र विभाग स्वामी शुकदेवानन्द कालेज, शाहजहांपुर संबद्ध महात्मा ज्योतिबा फुले रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली

[2]विभागाध्यक्ष अर्थषास्त्र विभाग स्वामी शुकदेवानन्द कालेज, शाहजहांपुर संबद्ध महात्मा ज्योतिबा फुले रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली

शोध-सारांश

भारत में सार्वजनिक वितरण प्रणाली खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने का एक प्रभावी तंत्र है। यह प्रणाली गरीब एवं कमजोर वर्गों को सस्ते दर पर अनाज उपलब्ध कराती है तथा कुपोषण, भूख और गरीबी को कम करने में महत्वपूर्ण योगदान देती है। किंतु PDS संचालन पर होने वाला भारी सब्सिडी व्यय देश के राजकोषीय ढाँचे के लिए चुनौती बनता जा रहा है। खाद्य सब्सिडी का आकार बढ़ता जा रहा है, जिससे राजकोषीय घाटा, बजटीय प्राथमिकताएँ और सार्वजनिक व्यय के स्वरूप प्रभावित होते हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में पीडीएस सब्सिडी के आर्थिक तर्क, लागत संरचना, वित्तीय भार, शासन-संबंधी चुनौतियाँ, अनाज की खरीद, भंडारण एवं वितरण प्रणाली और भविष्य के सुधार विकल्पों का विस्तृत विश्लेषण किया गया है। शोध से यह स्पष्ट होता है कि पारदर्शिता, डिजिटलीकरण, बेहतर लक्षित लाभार्थी चयन, आपूर्ति-श्रृंखला सुधार, कृषि नीति के समन्वय और डायरेक्ट बेनीफिट ट्रांसफर जैसे उपायों से सब्सिडी भार कम किया जा सकता है, जबकि खाद्य सुरक्षा पर कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ेगा।

कुंजी-शब्द: सार्वजनिक वितरण प्रणाली (PDS), खाद्य सुरक्षा, खाद्य सब्सिडी, राजकोषीय घाटा, डिजिटल वाउचर, लक्षित लाभार्थी चयन, कृषि नीत

ARTICLE HISTORY
Received: 30 July 2026**; Accepted:** 30 August 2026**; Published:** 20 September 2026

CITATION
मोनू कुमार, सार्वजनिक वितरण प्रणाली में सब्सिडी का आर्थिक एवं राजकोषीय विश्लेषण, ***Pedagogy Insights***, 1(2), 132-138.
DOI: https://doi.org/ 10.5281/

1. प्रस्तावना

भारत एक विशाल और विविध सामाजिक-आर्थिक देश है जहां जनसंख्या का बड़ा हिस्सा निम्न आय वर्ग से संबंधित है। आर्थिक विषमता, बेरोजगारी, अपूर्ण पोषण और खाद्य असुरक्षा देश की प्रमुख चुनौतियाँ हैं। ऐसे

COPYRIGHT: © 2026 The Author(s). This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0International License (CC-BY 4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited. See http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

ISSN: 3139-843X

संदर्भ में सार्वजनिक वितरण प्रणाली ने करोड़ों लोगों के जीवन में स्थिरता और सुरक्षा प्रदान की है। सरकार द्वारा प्रदान की जाने वाली खाद्य सब्सिडी, विशेष रूप से सार्वजनिक वितरण प्रणाली के माध्यम से, गरीब परिवारों की आय में वृद्धि, खाद्य मूल्य स्थिरीकरण और भूख उन्मूलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। किंतु यह सब्सिडी आर्थिक व राजकोषीय दृष्टि से भारी बोझ बनती जा रही है।

शोध पत्र का उद्देश्य-

इस शोध पत्र के उद्देश्य निम्नलिखित है-

1. पीडीएस सब्सिडी की संरचना का अध्ययन।
2. इसके आर्थिक तर्क एवं सामाजिक लाभों का विश्लेषण।
3. इसके वित्तीय लागत एवं राजकोषीय प्रभावों का मूल्यांकन।
4. वर्तमान चुनौतियों का अध्ययन।
5. सुधार के संभावित उपायों की पहचान।

भारतीय सार्वजनिक वितरण प्रणाली का परिचय

भारत की सार्वजनिक वितरण प्रणाली दुनिया की सबसे बड़ी खाद्य वितरण व्यवस्थाओं में से एक है। इसका संचालन खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण विभाग (क्थ्च्क्) तथा भारतीय खाद्य निगम (थ्ब्प्) के माध्यम से किया जाता है। इस प्रणाली के मुख्य घटक-

1. न्यूनतम समर्थन मूल्य पर अनाज की खरीद।
2. भंडारण, परिवहन और वितरण।
3. सामान्य उपभोक्ताओं को सस्ते दाम पर अनाज उपलब्ध कराना।
4. 2013 के राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम (छथ्ै।) ने च्क्ै की कवरेज व सब्सिडी भार दोनों को दोगुना कर दिया।

पीडीएस सब्सिडी की संरचना

सार्वजनिक वितरण प्रणाली सब्सिडी दो मुख्य भागों में विभाजित है-

1. खाद्य सब्सिडीः- यह न्यूनतम समर्थन मूल्य पर खरीद, भंडारण, भारतीय खाद्य निगम की परिचालन लागत और वितरण की संचयी लागत का वह हिस्सा है जो उपभोक्ता कीमत से अधिक है।
2. उपभोक्ता सब्सिडीः- राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम के तहत लाभार्थियों को 1 रुपये तथा 3 रुपये प्रति किलो की दर से अनाज उपलब्ध कराया जाता है, जबकि सरकार इसकी वास्तविक लागत 30 रुपये तथा 40 रुपये प्रति किलो तक देती है।

ISSN: 3139-843X

सब्सिडी लागत का विभाजन

- खरीद लागत।
- भंडारण एवं परिवहन लागत।
- भारतीय खाद्य निगम का परिचालन घाटा।
- बफर स्टॉक के रखरखाव की लागत।
- वितरण लागत।
- फेयर प्राइस शॉप्स की मार्जिन राशि।
- यह पूरी सब्सिडी मिलकर सरकार पर भारी वित्तीय भार डालती है।

पीडीएस सब्सिडी की आर्थिक आवश्यकता

1. खाद्य मूल्य स्थिरीकरणः- सार्वजनिक वितरण प्रणाली खाद्य मूल्य मुद्रास्फीति को नियंत्रित रखने में मदद करता है। यदि बाजार में अनाज की कीमतें बढ़ें, तब भी गरीब परिवार सस्ती दर पर अनाज प्राप्त कर पाते हैं।
2. भूख एवं कुपोषण से संरक्षणः- सार्वजनिक वितरण प्रणाली कुपोषण, कम वजन और भूख की समस्याओं को कम करता है। राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम के बाद करोड़ों लोगों को सुनिश्चित खाद्य उपलब्धता मिली।
3. कृषि उत्पादन में स्थिरताः- न्यूनतम समर्थन मूल्य आधारित खरीद किसानों को न्यूनतम आय सुरक्षा देती है, जिससे कृषि उत्पादन प्रोत्साहित होता है।
4. सामाजिक सुरक्षाः- सार्वजनिक वितरण प्रणाली एक प्रकार का अधिकार-आधारित सामाजिक सुरक्षा कार्यक्रम है, जो गरीबों के लिए "जीवन रक्षा तंत्र" की तरह कार्य करता है।

पीडीएस सब्सिडी का राजकोषीय भार

1. बजटीय व्यय में निरंतर वृद्धि

- भारत में खाद्य सब्सिडी बजट का सबसे बड़ा घटक है।
- खाद्य सब्सिडी खर्च कई बार कुल केंद्र सरकार के राजकोषीय घाटे का 25 प्रतिषत तक पहुंच जाता है।

2. भारतीय खाद्य निगम का बढ़ता ऋण

- सरकार कई बार भारतीय खाद्य निगम का बकाया चुकाने में देरी करती है, जिससे इसका कैश फ्लो बिगड़ता है और यह NSSF से भारी ब्याज दरों पर उधार लेता है।

3. वितरण लागत में वृद्धि

- परिवहन, भंडारण और श्रम लागत बढ़ने से सब्सिडी में निरंतर वृद्धि हो रही है।

ISSN: 3139-843X

4. बफर स्टॉकिंग मानदंड से अधिक भंडारण

- अक्सर सरकार आवश्यकता से अधिक अनाज खरीदती है।
- भंडारण लागत बढ़ती है।
- अनाज खराब होने का जोखिम बढ़ता है।

5. सब्सिडी का सकल घरेलू उत्पाद पर प्रभाव

उच्च सब्सिडी के कारण-

- पूंजीगत व्यय (इन्फ्रास्ट्रक्चर आदि) कम हो जाता है।
- करों में बढ़ोतरी की आवश्यकता होती है।
- मुद्रास्फीति पर अप्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है।

पीडीएस सब्सिडी की समस्याएँ

1. लीकेज और भ्रष्टाचार

पुराने सार्वजनिक वितरण प्रणाली में 30-40 प्रतिषत तक लीकेज पाया गया था।

कारणः-

- फर्जी राशन कार्ड
- अनाज की चोरी
- डुप्लीकेट लाभार्थी
- परिवहन में अनाज की हेरा-फेरी

2. गलत लाभार्थी चयन

भारत में BPL की पहचान लंबे समय तक विवादित रही है। कई योग्य लोग वंचित रह गए, जबकि कई अयोग्य लोग लाभ उठा रहे थे।

3. लागत-प्रभावी न होना

कई अध्ययनों के अनुसार सरकार रू. 30 खर्च करती है, तभी लाभार्थी को रू. 1 का वास्तविक लाभ मिलता है।

4. वितरण गुणवत्ता के मुद्दे

- अक्सर अनाज की गुणवत्ता खराब होती है।
- मकई, टूटे चावल और पुराने गेहूं जैसे अनाज दिए जाने की शिकायतें मिलती हैं।

ISSN: 3139-843X

5. पर्यावरणीय प्रभाव

- न्यूनतम समर्थन मूल्य आधारित खरीद मुख्यतः- गेहूं, चावल पर केंद्रित है, जिससे- जल दोहन रासायनिक खादों का अत्यधिक उपयोग, मोनोकल्चर की समस्या बढ़ती जा रही है।

आर्थिक विश्लेषण

1. मांग-आपूर्ति प्रभाव

- सार्वजनिक वितरण प्रणाली गरीबी रेखा से नीचे के परिवारों की वास्तविक आय बढ़ाता है।
- इससे स्वास्थ्य में सुधार, शिक्षा पर अधिक खर्च, ग्रामीण मांग में वृद्धि।

2. बाजार की विकृति

- न्यूनतम समर्थन मूल्य खरीद से- चावल और गेहूं उत्पादन असंतुलित रूप से बढ़ता है। दालों, तेल बीजों, मोटे अनाज का उत्पादन घटता

3. फूड इकोनॉमिक्स का दुष्चक्र

- उपभोक्ता सस्ती दर पर अनाज पाते हैं।
- सरकार अधिक न्यूनतम समर्थन मूल्य देती है।
- अधिक खरीद होती है।
- अधिक भंडारण लागत आती हैं।
- अधिक सब्सिडी खर्च।
- राजकोषीय घाटा बढ़ता है।
- यह एक दीर्घकालिक चुनौती है।

राजकोषीय विश्लेषण

1. राजकोषीय घाटे में वृद्धि

- खाद्य सब्सिडी बढ़ने से सरकार के घाटे में लगातार वृद्धि होती है।
- राजकोषीय अनुशासन बनाए रखना कठिन हो जाता है।

2. बजटीय प्राथमिकताओं का विस्थापन

- खाद्य सब्सिडी बढ़ने से निम्न क्षेत्रों का व्यय प्रभावित होता है- शिक्षा, स्वास्थ्य, इंफ्रास्ट्रक्चर, वैज्ञानिक अनुसंधान।

3. उधारी पर निर्भरता

- भारतीय खाद्य निगम और सरकार को छैथ् और बैंकों से भारी भरकम ऋण लेना पड़ता है।

ISSN: 3139-843X

- इस पर ब्याज का बोझ भी बढ़ता है।

4. कृषि लागत व मूल्य नीति पर प्रभाव

- न्यूनतम समर्थन मूल्य आधारित खरीद खाद्य सब्सिडी को बढ़ाती है और फसल विविधीकरण को रोकती है।
- इससे कृषि नीति में विकृति उत्पन्न होती है।

नीति सुधार और समाधान

1. वन नेशन वन राशन कार्ड

लाभार्थी कहीं भी राशन ले सकते हैं- माइग्रेशन पर असर, पारदर्शिता, गलत लाभार्थी कम होते हैं

2. आधार आधारित प्रमाणीकरण इससे- डुप्लीकेट कार्ड समाप्त, फर्जी लाभार्थी कम, घपले में कमी।

3. आपूर्ति श्रृंखला में तकनीकी सुधार- GPS आधारित ट्रक ट्रैकिंग, ऑनलाइन स्टॉक मैनेजमेंट, ई- Pos मशीनें।

4. DBT मॉडल (Cash Transfer)

कुछ राज्यों ने प्रयोग किया है।

इसके लाभ-

- लीकेज खत्म।
- प्रशासनिक लागत कम।
- उपभोक्ता विकल्प बढ़ते हैं।

5. फसल विविधीकरण और MSP सुधार

मोटे अनाज, दालें, तेल बीज की खरीद को बढ़ावा देना आवश्यक है।

6. भारतीय खाद्य निगम की संरचनात्मक पुनर्गठन

- परिचालन लागत कम करना।
- भंडारण विज्ञान में सुधार।

7. राज्यों की सर्वोत्तम प्रथाए, अपनाना।

तमिलनाडु, छत्तीसगढ़ और ओडिशा ने मॉडल PDS सिस्टम बनाए हैं।

ISSN: 3139-843X

निष्कर्ष

भारत की सार्वजनिक वितरण प्रणाली करोड़ों नागरिकों के लिए जीवन रक्षक तंत्र है। इसका सामाजिक और आर्थिक महत्व अत्यधिक है। किंतु इस प्रणाली को चलाने के लिए सरकार को भारी सब्सिडी देनी पड़ती है, जो राजकोषीय संतुलन पर प्रतिकूल प्रभाव डालती है। अर्थव्यवस्था के दीर्घकालिक स्वास्थ्य के लिए यह आवश्यक है कि- सार्वजनिक वितरण प्रणाली सब्सिडी को टार्गेटेड बनाया जाए, भारतीय खाद्य निगम का सुधारीकरण हो, क्ठज् को सीमित क्षेत्रों में लागू किया जाए। अनाज वितरण प्रक्रिया को पूर्णतः पारदर्शी बनाया जाए। इन उपायों से देश खाद्य सुरक्षा को बनाए रखते हुए सब्सिडी पर होने वाले खर्च को नियंत्रित कर सकता है। पीडीएस सब्सिडी का यह आर्थिक व राजकोषीय विश्लेषण स्पष्ट करता है कि एक संतुलित नीति ढाँचा- सामाजिक सुरक्षा, आर्थिक दक्षता, राजकोषीय अनुशासन- तीनों को साथ लेकर चल सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. **भारत सरकार- आर्थिक सर्वेक्षण** Economic Survey of India **वित्त मंत्रालय।**
2. **भारत सरकार- भारत का बजट** (Union Budget), **वित्त मंत्रालय।**
3. **भारत सरकार- राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम, 2013।**
4. **भारत सरकार- खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण विभाग की वार्षिक रिपोर्ट, उपभोक्ता मामले, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण मंत्रालय।**
5. **भारतीय रिजर्व बैंक-** (Report on Currency and Finance) **तथा संबंधित आर्थिक रिपोर्टें।**
6. NITI Aayog — Public Distribution System and Food Security **से संबंधित रिपोर्टें।**
7. Planning Commission, Government of India — Evaluation of Targeted Public Distribution System (TPDS)
8. Jean Drèze ,oa Reetika Khera — PDS and Food Security in India **से संबंधित शोध-अध्ययन।**
9. Himanshu, and Sen, Abhijit — Public Distribution System and Food Security in India **से संबंधित आर्थिक अध्ययन।**